[कहानी की समीक्षा]

पंचलाइट

पंचलाइट फणीश्वरनाथ 'रेणु' की आँचलिक कहानी है। ग्रामीण जीवन पर आधारित है। इसकी समीक्षा इस प्रकार है —

कथावस्तु / कथानक :—

पंचलैट (पंचलाइट) कहानी के माध्यम से ग्रामवासियों की मनोस्थिति की वास्तविक झाँकी प्रस्तुत की है। इस कहानी में किस प्रकार आवश्यकता बड़े बड़े अवगुण या निषेध अथवा रुढ़िगत संस्कार को अनावश्यक सिद्ध कर देती है।

महतो टोली के लोग पंचलाइट खरीद तो लाते हैं परन्तु जलाना नहीं जानते हैं। इस टोली के लिए यह अपमान की बात है। समस्या के समाधान के लिए मुनरी अपने प्रेमी गोधन जिसका हुक्का पानी बंद है उसके बारे में बताती है। गोधन आता है और पंचलैट जला देता है। गाँव के लोगों में खुशी की लहर दौड़ जाती है। सरदार गोधन के सात खून 'माफ' कर देता है। सारे प्रतिबन्ध हटा लिए जाते हैं। मुनरी की माँ गुलरी काकी रात के भोजन पर उसे आमंत्रित कर लेती है। गोधन मुनरी का प्रेम फिर से हरा भरा हो जाता है।

पात्र तथा चरित्र-चित्रण :—

कहानी के केन्द्र में अंचल या क्षेत्र विशेष है। कोई भी पात्र कहानी के केन्द्र में नहीं है। इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख पात्र गोधन है।

प्रस्तुत कहानी में सरदार, दीवान, मुनरी की माँ, गुलरी काकी, हड़ीदार, फुटेगी झा आदि एक वर्ग के पात्र हैं जबकि गोधन एवं मुनरी दूसरे वर्ग के।

लेखक ने ग्रामीण समूह के चरित्र को उभारने में विशेष सफलता प्राप्त हुई है।

कथोपकथन या संवाद :—

'पंचलाइट' के संवाद सरल, रोचक, स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल हैं। संवादों के माध्यम से ग्रामीण अंचल की रूढ़िवादिता, अज्ञानता पर प्रकाश डाला है।

जैसे— मुनरी ने कनेली के कान में बात डाल दी— 'कनेली-कनेली चिगो, चिध, चिन....। कनेली मुस्कराकर रह गयी— गोधन तो बन्द है। मुनरी बोली तू कह तो सरदार से। 'गोधन जानता है पंचलाइट बालना'।

अतः संवाद पात्रानुकूल एवं स्वाभाविक हैं, लेखक सफल रहा है।

देशकाल एवं वातावरण :—

रेणु की पंचलाइट कहानी ग्रामीण परिवेश की कहानी है। बिहार के ग्रामीण अंचल का चित्र प्रस्तुत किया गया है। ग्रामीणों के आचार-विचार एवं अन्धविश्वासों का भी चित्रण हुआ है।

भाषा-शैली :-

इस कहानी की भाषा बिहार के ग्रामीण अंचल में बोली जाने वाली जन भाषा है।

जैसे —

"एक नौजवान ने आकर सूचना दी — राजपूत टोली के लोग हंसते हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर 'पंचलैट' के सामने पाँच बार उठो-बैठो तुरन्त जलने लगेगा।"

उद्देश्य :—

रेणु जी ने इस कहानी में ग्राम सुधार की प्रेरणा दी है। आवश्यकता बड़े-बड़े रूढ़िगत संस्कारों को भी अनावश्यक बना देती है। जैसे गोधन के एक गुण के कारण सारे जाति बंध हटा दिए जाते हैं।

शीर्षक : कहानी कला के तत्वों के आधार पर पंचलाइट एक सफल कहानी सिद्ध होती है। सारी घटनाएँ पंचलाइट के इर्द-गिर्द घूमती है। अतः शीर्षक का नामकरण सार्थक सिद्ध होता है।

[गोधन का चरित्र-चित्रण]

गोधन 'पंचलाइट' कहानी का प्रमुख पात्र है। इसे कहानी का नायक कहलाना भी उचित है। इसकी चारित्रिक विशेषताएं इस प्रकार हैं —

1. युवक की स्वाभाविक प्रवृत्ति :—

युवा वर्ग की अपनी कुछ स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ होती हैं। गोधन भी उसी तरह एक लापरवाह एवं मनचला युवक है, वह सलीमा का सलम-सलमे वाला गाना गाता है और मुनरी से प्रेम करता है। वह अल्हड़ ग्रामीण युवा है।

2. गुणवान व्यक्तित्व :—

अशिक्षित है परन्तु गोधन में गुणों का अभाव नहीं है। वह पूरे महतो टोली में एक मात्र ऐसा व्यक्ति है जो पेट्रोमेक्स जलाना जानता है। वह अत्यन्त चतुर व्यक्ति है। वह सिरिट की जगह नारियल का तेल प्रयोग कर के पंचलाइट जला देता है।

3. स्वाभिमानी व्यक्ति :—

गोधन स्वाभिमानी प्रवृत्ति का युवा है। हुक्का पानी बंद था इसीलिए छड़ीदार के बुलाने पर वह मना कर देता है। जिस गुलरी ने उसे सजा सुनवाई थी, उसी के मनाने पर वह आया।

4. समाज की प्रतिष्ठा के प्रति संवेदनशील :—

गोधन समाज की प्रतिष्ठा के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, वह अपने अपमान को भुलाकर अपनी महतो टोली की इज्जत के लिए पंचलाइट जलाने जाता है।

5. निर्भीक स्वभाव वाला :—

गोधन स्वभाव से निडर है। वह बिना डरे मुनरी के प्रति प्रेम को व्यक्त करता है। ग्रामीण परिवेश में पलने के बावजूद भी वह आधुनिकता की ओर बढ़ता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गोधन बुद्धिमान, निर्भीक, मनचला एवं स्वाभिमानी व्यक्तित्व का धनी युवा है।

SUBSCRIBE
ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात् मुक्तिः
* ।।ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ।।*
By:- Arunesh Sir